जीवन से अटूट संबंध है - जल का

नोतन लाल
प्रिंसिपल,
डी-1209, दबुआ कालोना, फरीदाबाद

'जल' मानव जीवन के लिए प्राण की तरह है। हिन्दी की प्रसिद्ध काव्यमय सूक्ति के अनुसार :

"रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरें , मोती, मानुष, चून ।।"

अर्थात् (कमशः चमक, सम्मान और आद्रता) के बिना मोती, मनुष्य और चूना व्यर्थ हैं। मानव जीवन हेतु जल का बहुत ही महत्व है। या यों कहें कि जल ही जीवन है अतिशयोक्ति न होगी। हमारे द्वारा जल का वर्षो से अपार दोहन किया जा रहा है; साथ ही फिजूलखर्ची भी जी खोलकर की जा रही है।

अतः जल की बूंद-बूंद का महत्व पहचानते हुए जल की बूंद-बूंद को सहेज कर चलें। जल की हर बूंद कीमती है। यदि कोई इन्सान इससे बेखबर होकर मूल्यवान जल बर्बाद कर रहा है तो वह अपने जीवन के साथ-साथ दूसरों का जीवन भी नष्ट करने पर तुला हुआ है। वह दिन दूर नहीं जब उसे एक-एक बूंद पानी के लिए तरसना पड़ेगा। यह धरती से निकलने वाला अमृत है जो हर जीवधारी को जीवन प्रदान करता है। यदि हमने अपनी मानसिकता में आमूलचूक परिवर्तन नहीं किया तो वह दिन दूर नहीं जब मुस्लिम देशों की तर्ज पर शुद्ध जल हमें बोतलों में खरीदना पड़ेगा। तेल भण्डार वाले अरब देश तो अपने मूल्यवान तेल की बदौलत जीवन में सफल हो गए, लेकिन हमारे देश को जल की त्रासदी बड़ी महंगी पड़ेगी।

यह भी अनुमान लगाया गया है कि सामान्यतया वनों में लगभग 5टन पत्तियाँ प्रति हैक्टेयर गिरती हैं, और ये पत्तियां भूमि के गुणों में अत्यन्त लाभकारी परिवर्तन करती हैं। इनमें से प्रमुख हैं: मृदा-तापमान, मृदा-जल, जल-स्तर, उर्वरा शक्ति, रसायनिक गुण, भूमि की संरचना (रन्ध्रता), इत्यादि। सघन वन में भूमि एक स्पंज के समान हो जाती है, जो वर्षा का अधिकांश भाग सोख लेती है, जिससे सतही बहाव नियंत्रित हो जाता है। इससे न केवल भू-क्षरण कम होता है वरन् वनों की जल ग्रहण क्षमता भी बढ़ जाती है। जहाँ एक ओर इससे बाढ़ का प्रकोप कम करने में मदद मिलती है, वहीं दूसरी ओर नदी-नालों में निर्वाध रूप से जल प्रवाह बना रहता है। भू-क्षरण कम होने से सिंचाई , विद्युत एवं अन्य प्रयोजनों के लिए निर्मित जलाशयों की प्रभावकारी उम्र भी बढ़ जाती है। एक अनुमान के अनुसार निजाम सागर जलाशय में रेत व मिट्टी भरने के कारण 60 प्रतिशत जल संग्रह क्षमता समाप्त हो चुकी है।

नेशनल एनवायरमेण्टल इंजीनियरिंग एण्ड रिसर्च इंस्टीटयूट के वैज्ञानिकों के अनुसार भारत में उपलब्ध कुल पानी का लगभग 70 प्रतिशत भाग प्रदूषित है। योजना आयोग भी मानता है कि उत्तर डल झील से लेकर दक्षिण की पेरियार और चालियार नदी तक, पूर्व में दामोदर और हुगली से लेकर पश्चिम की ढाका उपनदी तक, पानी के प्रदूषण की स्थिति एक समान भयानक है। गंगा जैसी हमारी सदानीरा नदियाँ भी आज खूब प्रदूषित हो रही हैं। अर्थात जल-प्रदूषण के मामले में देश कश्मीर से कन्याकुमारी तक एक सा हो चला है ।

आश्चर्यजनक तथ्य तो यह है कि उद्योगों के गंदे पानी से होने वाले जल -प्रदूषण से लगभग चार गुणा जल-प्रदूषण हमारी बस्तियों और नगरों से निकलने वाले गंदे पानी से होता है। ऐसा अधिकांश पानी बिना शुद्ध किए ही जल स्रोतों में गिरा दिया जाता है। इस भारी प्रदूषण का परिणाम राष्ट्र के स्वास्थ्य के लिए एक गम्भीर खतरा है। एक मोटे अनुमान के अनुसार भारत में होने वाली दो-तिहाई बीमारियों जैसे टायफाइड, पीलिया,

हैजा, अतिसार और पेचिस आदि पानी से होती हैं। यह भी अनुमान लगाया गया है कि प्रतिवर्ष पानी के कारण होने वाली बीमारियों के कारण 7 करोड़ 30 लाख कार्य दिवस नष्ट होते हैं। प्रदूषित जल से होने वाली बीमारियों के इलाज का खर्च और उससे होने वाली हानि का अंदाजा लगभग 1500 करोड़ रूपया प्रतिवर्ष आंका गया है।

ताजा अध्ययनों से पता चला है कि भूमिगत जल के प्रदूषण की समस्या भी दिनों-दिन बढ़ रही है। गाँधी शांति प्रतिष्ठान के जोधपुर केन्द्र की एक रिपोर्ट के अनुसार जोधपुर, पाली और बालोतरा के लघु-उद्योग क्षेत्र के लगभग 1500 कपड़ा छपाई केन्द्र प्रतिदिन 1.5 करोड़ लीटर गंदा पानी खुली नालियों, नदियों के पाटों और तालाबों में उंडेलते हैं। मिट्टी के रेतीला होने के कारण पानी के साथ जहरीले रासायनिक कण छन-छन कर उन कूओं, तालाबों और जलाशयों में जा मिलते हैं, जिनसे कम से कम दस लाख लोगों के लिए जल आपूर्ति होती है। जोधपुर विश्वविद्यालय के रसायन शास्त्र विभाग ने उन अवशेषों में कई ऐसे तत्व पाये हैं, जो कैंसर फैलाते हैं।

वृक्षों के निर्दयतापूर्वक कटाई से हमारा जल-चक्र गड़बड़ा गया है। अतिवृष्टि और अनावृष्टि की विपदाओं का सामना करना पड़ता है। यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि वन वर्षा कराने में कितने सहायक होते हैं। उनमें इतनी चुंबकीय शक्ति होती है जिसकी वजह से बादल बरसते हैं। बात चाहे मौसम के संतुलन को बनाए रखने की हो या वर्षा के पानी के संचय की, वृक्ष इनमें निर्णायक भूमिका निभाते हैं।

जल रोकने, उसकी उपलब्धता बढ़ाने और जल के खर्चे में मितव्यिता लाने में यदि हम सफलतापूर्वक आगे बढ़ सकें, तो हम सर्वांगीण विकास करने में सहायक होंगे। हमें मूल्यवान जड़ी-बूटियों के अपार भंडार के साथ अनाज, साग सब्जियाँ, फल आदि विपुल मात्रा में प्राप्त होंगे, जो हमारे स्वास्थ्य में गुणातीत श्रीवृद्धि करेंगे। इसके अतिरिक्त सब कुछ भरपूर प्राप्ति की बदौलत जन-जन को मसाले, सुखे मेंवे, दूध-दही, दालें, गुड, शक्कर, चावल, मांस, मछली, अन्न आदि नैसर्गिक पदार्थ प्राप्त होंगे, जो जीवन चलाने के लिए अति आवश्यक हैं। ढेरों औषधियों का निर्माण होगा, जिससे हम देशी एवं विदेशी मुद्रा अर्जित कर राष्ट्र निर्माण में गति ला सकेंगे और जन-जन की सुविधाओं का विस्तार करने में समर्थ हो सकेंगे।

अर्थात् शरीर और प्राण, नदी और जल का जो संबंध है, वहीं पुरूष और स्त्री का है। अतः हम समस्त भारत वासियों का पुनीत कर्तव्य है कि जल की अपार महता तथा उपयोगिता को दृष्टिगत रखते हुए अपने मंगलमय, कल्याणकारी एवं सुखमय जीवन हेतु सदैव इस के महत्व को समझें और इस मूल मंत्र के साथ अपने जीवन पथ की ओर अग्रसर हों :

"धरा से पुण्य समीर प्रवाह को नहीं प्रदूषित आप करें
पर्यावरण और स्वच्छता को आज सुगन्धित आप करें।"